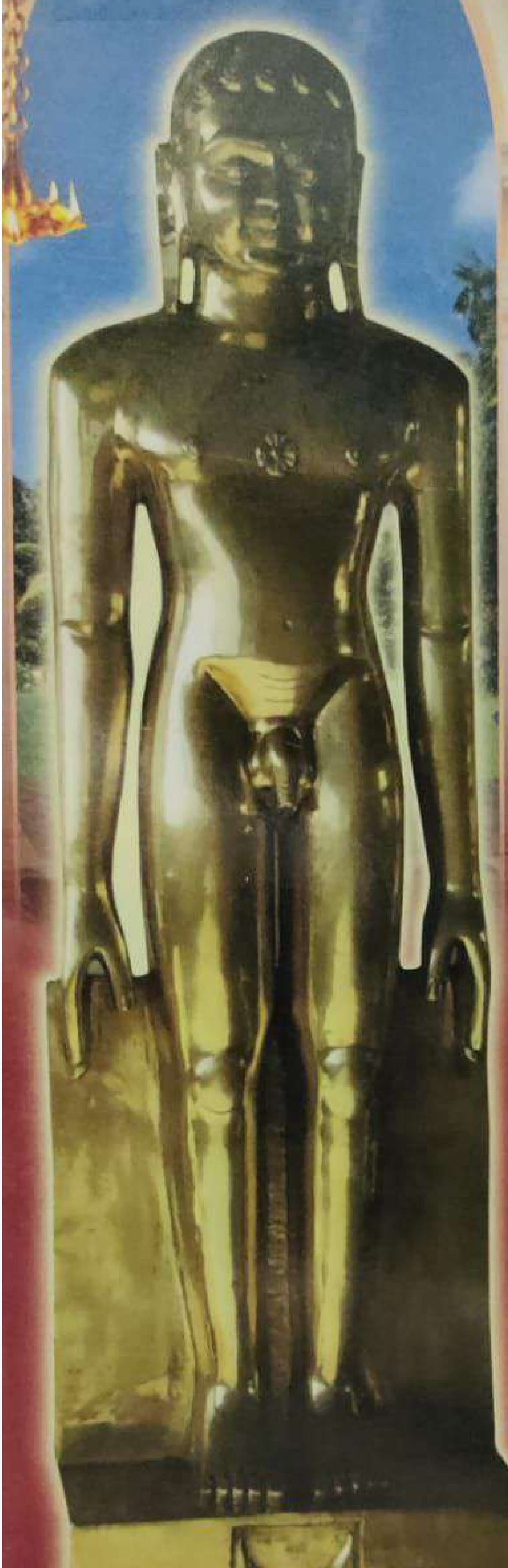

श्री

चंदनषष्ठी व्रत विधान

आशीर्वाद एवं सम्पादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

चन्दन षष्ठी विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवहर्णम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतु, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

चन्दन षष्ठी विधान

113.	चंदनषष्ठी व्रत विधान	448
114.	प्रशस्ति	464
115.	आरती	465
116.	अर्घावली	466
117.	समुच्चय अर्घ	468
118.	शांतिपाठ (हिन्दी), विसर्जन पाठ	469-470
119.	साहित्य सूची	471-472

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्‌गति कराता है, सद्‌गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्‌ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग–बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य–आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व–पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह–

–आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28–5–2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

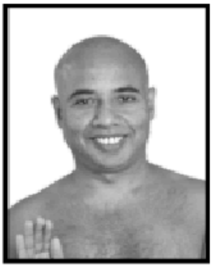

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी शृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्‌पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– **पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।**
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान।।

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108–108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार–चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक–एक सिंहासन और दो–दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी व ईशान इन्द्र–इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श–रस–गंध–वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े–बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर–सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट्ट श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

इसे पढ़ें फिर आगे बढ़ें

36/473

पंच कल्लाण ठाणइ, जाणि वि संजाद मच्चलोयम्मि।
मण, वयण, काय, सुद्धो, सव्वे सिरसा णमस्सामि॥

दोहा

चन्दन षष्ठी व्रत करो, पूर्ण शुद्धि के साथ।
देव-शास्त्र-गुरु को भजो, त्रय योगों के साथ॥

जैनागम में देव-शास्त्र एवं गुरु की भक्ति पूर्ण शुद्धि के साथ बताई गई है। जब जिनवाणी का अध्ययन करते हैं तो पता लगता है शुद्धि का कितना महत्त्व है और अशुद्धि का क्या दुष्परिणाम होता है। भाव के साथ-साथ द्रव्य भी शुद्ध होना चाहिये। मन के साथ वचन की शुद्धि और वचन के साथ काय की शुद्धि आवश्यक है, जब तक हमारे मन-वचन-काय शुद्ध नहीं है, पवित्र नहीं है। तब तक ऐसी अशुद्ध अवस्था में यदि हम जिनेन्द्र प्रभु की आराधना करते हैं तो घोर असातावेदनीय कर्म का बंध करते हैं। यदि अशुद्धि में मुनिराजों की भक्ति कर उन्हें आहारदान आदि देते हैं तो कायशुद्धि न होने के कारण कुष्ठरोग से पीड़ित

होते हैं। शास्त्र पढ़ने से ज्ञानावरणी कर्म का बंध करते हैं। जाने-अनजाने में अशुद्ध अवस्था में जो भी हमारे द्वारा गुरुओं का अनादर हुआ हो, चारित्र धारियों का अपमान हुआ हो, तीर्थों की वंदना की हो तो उसका प्रायश्चित करना चाहिये। हर धार्मिक कार्य में मन-वचन-काय की शुद्धि होना चाहिये। पाप से छूटने के लिये, मुक्ति पाने के लिये यह 'चंदन षष्ठी व्रत' हर नर-नारी को वर्ष में एक बार 6 साल तक करना चाहिये। श्रावक श्रद्धा के साथ विवेक अवश्य रखे, मन-वचन-काय की शुद्धिपूर्वक देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करे।

अशुद्धि में कभी भी जिनेन्द्र प्रभु के एवं गुरु के व जिनवाणी के दर्शन नहीं करना चाहिये। शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति करें, पुण्य का संचय करें।

अशुद्धि में दिया गया दान क्या फल देता है वह इस व्रत की कथा से पता चलता है। जब हम से अशुद्ध अवस्था में कोई धार्मिक काम हो जाता है तो हमारा मन अपराधी बनकर दिन-रात दुःखी करता है, पाप का बोझ बढ़ जाता है। अपराध शांति से सोने भी नहीं देता है, हमारा मन हमें क्षमा नहीं करता, बार-बार गल्तियों को याद दिलता है। आत्मा अंदर से रोती है।

अपराधी व्यक्ति अपने आपको माफ नहीं कर पाता, अन्दर से हमेशा दुःखी रहता है। तनाव में रहता है। कैसे इस पाप से छुटकारा पाऊँ, पाप से बचूँ। अतः पापों से बचने के लिये यह **'चंदन षष्ठी व्रत'** आचार्यों ने आगम में बताया है। अवश्यमेव सभी श्रावक-श्राविका इस व्रत का पालन करें, अशुद्धि में किये हुये पापों का प्रायश्चित करें।

सबके लिये चंदनषष्ठी व्रत विधान लिखा है। इस व्रत को करते हुये सभी भक्त प्रभु की भक्ति में तल्लीन होकर सातिशय पुण्य का संचय करें। पापों से मुक्त होकर परमात्म पद को प्राप्त करें। इस विधान में 56 अर्घ हैं और एक पूर्णार्घ है। व्रत पूर्ण होने पर यह विधान करें। विधान लिखने में कुछ त्रुटि हुई हो तो गुण ग्रहण का भाव रखें। पुस्तक प्रकाशक, पाठक मुद्रक सभी को आशीर्वाद।

-गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

चंदनषष्ठी व्रत कथा

दोहा- देव नमों अरिहन्त नित, वीतराग विज्ञान।
चन्दनषष्ठी व्रतकथा, कहूँ स्वपर हित मान॥

काशी देश में वाराणसी (बनारस) नाम का प्रसिद्ध नगर है जिसे तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् ने अपने शुभ जन्म से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज्य करता था। रानी का नाम पद्मनी था।

एक दिन राजा सभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छह ऋतुओं के फल-फूल लाकर राजा को भेंट किये। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजनों सहित वंदना को गया। भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा दे नमस्कार करके बैठ गया।

श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म और पश्चात् श्रावक धर्म का वर्णन किया। उसमें भी सबसे प्रथम सब धर्मों के मूल सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया कि वस्तु स्वरूप का यथार्थ श्रद्धान् हुए बिना सब ज्ञान और चारित्र निष्फल हैं। यह वस्तु स्वरूप का श्रद्धान् सत्यार्थदेव (अरिहन्त), सत्यार्थ (निर्ग्रन्थ) गुरु और दयामय (जिनप्रणीत) धर्म में आस्था से ही होता है।

अतएव प्रथम ही परीक्षापूर्वक इनका श्रद्धान् होना आवश्यक है। तत्पश्चात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह त्याग से ये पाँच व्रत एकदेश पालन करें तथा इन्हीं के यथोचित्त पालनार्थ सप्तशीलों (तीनों गुणव्रत वा चार शिक्षाव्रतों) का पालन करें, इत्यादि उपदेश दिया। तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा-हे ऋषिराज ! अपनी रानी के प्रति मेरा अधिक स्नेह होने का कारण क्या है? यह सुनकर श्री गुरु ने कहा-

राजन ! सुनो, अवन्ती देश में एक उज्जैन नाम का नगर है। वहाँ वीरसेन नाम का राजा था और उसकी रानी का नाम वीरमती था। इसी नगर में जिनदत्त नामक एक सेठ थे। उसकी जयावती नामक सेठानी से ईश्वरचन्द्र नाम का एक पुत्र भी था जो अपने मामा की सुपुत्री चंदना से पाणिग्रहण कर सुख से कालयापन करता था।

एक समय जिनदत्त सेठ और जयावती सेठानी कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहणकर मुनि आर्यिका हो गये और तप से आयु पूर्ण होने पर तप के माहात्म्य से स्वर्ग में देव व देवी हुये। पिता का पद प्राप्त कर ईश्वरचन्द्र सेठ भी सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा हेतु पधारे। तब ईश्वरचन्द ने भक्तिसहित मुनिराज को पड़गाह कर अपनी धर्मपत्नी से कहा कि श्री गुरुदेव को आहार देओ। तब चंदना बोली–

स्वामिन् ! मैं ऋतुमती हूँ, कैसे आहार दूँ?

ईश्वरचन्द्र ने कहा चुपचाप रहो, शोर मत करो। गुरुदेव मासोपवासी हैं इसलिए शीघ्र पारणा कराओ।

चन्दना ने पति के वचनानुसार मुनिराज को उसी अवस्था में आहार दे दिया। श्री मुनिराज तो आहार करके वन में चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात् इस गुप्त पाप का उदय होने से पति–पत्नी दोनों के शरीर में गलित कुष्ट हो गया जिससे वे अत्यन्त दुःखी हुये और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से संघसहित श्रीभद्र नामक दिगम्बर जैन मुनि उज्जैन के उद्यान में पधारे। नगर के लोग वंदना को गये और ईश्वरचंद्र भी अपनी भार्या के साथ वंदना को गया। वहाँ भक्तिपूर्वक नमस्कार कर बैठा और धर्मोपदेश सुना। पश्चात् पूछने लगा–

हे दयालो ! हमारे कौन पाप का उदय आया है कि जिससे हमारे यह व्यथा उत्पन्न हुई है? तब मुनिराज ने कहा–

तुमने पात्रदान के लोभ से गुप्त कपट कर ऋतुमती होने की अवस्था में भी आहारदान व मन–वचन–काय शुद्ध है कहकर अतिमुक्तक स्वामी को आहार दिया है अर्थात् तुमने अपवित्रता को भी पवित्रता कहकर चारित्र का अपवाद किया है। इसी पाप के कारण तुम्हारे यह असातावेदनीय कर्म का उदय आया है।

यह सुनकर उक्त दम्पत्ति (सेठ–सेठानी) ने अपने अज्ञात कृत्य पर बहुत पश्चात्ताप किया और पूछा–

भो यतिराज ! अब इस पाप से मुक्त होने का कोई उपाय बताइये। तब श्री गुरु ने कहा–हे भद्र ! सुनो, आश्विन वदी षष्ठी (गुजराती भादों वदी 6) को चारों प्रकार के आहार का त्याग कर, उपवास धारण करो। अष्टद्रव्य से छह पूजा करो। 108 बार णमोकार मंत्र का जाप करो। चार संघ को चार प्रकार का दान देओ। इस प्रकार व्रत करो।

तीनों काल सामायिक तथा अभिषेक, पूजन करो। उपवास के दिन और रात्रिभर आठ पहर तथा धारणा और पारणा के दिन चार पहर ऐसे सोलह पहरों तक घर में आरम्भ, इन्द्रियविषयों व कषायों का त्याग करो।

इस प्रकार छह वर्ष तक यह व्रत करो। पश्चात् उद्यापन करो। जहाँ जैन मंदिर नहीं हो वहाँ जिनालय बनवाओ। छह जिनबिम्ब पधराओ, छह जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार कराओ, छह शास्त्रों का वितरण करो। सब प्रकार के 6–6 उपकरण मंदिरों में चढ़ाओ, छह छात्रों को भोजन कराओ। चार प्रकार के (आहार, औषध, शास्त्र और अभय) दान देओ।

इस प्रकार व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक दम्पत्ति ने व्रत ग्रहण करके विधिसहित पालन किया। कुछ दिन में अशुभकर्म की

निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग हो गया और आयु के अन्त में संन्यासमरण कर वे दम्पत्ति स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव-देवी हुए। जो बहुत काल तक सुख भोगकर और नन्दीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा कर कालयापन करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुये हो और वह रत्नमाला देवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मिनी हुई है। परस्पर तुम दोनों का पूर्वभवों का सम्बन्ध होने से ही विशेष प्रेम हुआ है। यह सुनकर राजा को भव-भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो गया। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर मुनिदीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया जिसके प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्धपद को प्राप्त हुये।

और रानी पद्मिनी के जीव ने भी दीक्षा ली। यह भी तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर मनुष्य-भव लेकर मोक्षपद प्राप्त करेगा।

इस प्रकार ईश्वरदत्त सेठ और चंदना ने इस चन्दनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर-सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और भी जो नर-नारी यह व्रत पालेंगे वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

●●●

चन्दन षष्ठी विधान मण्डल

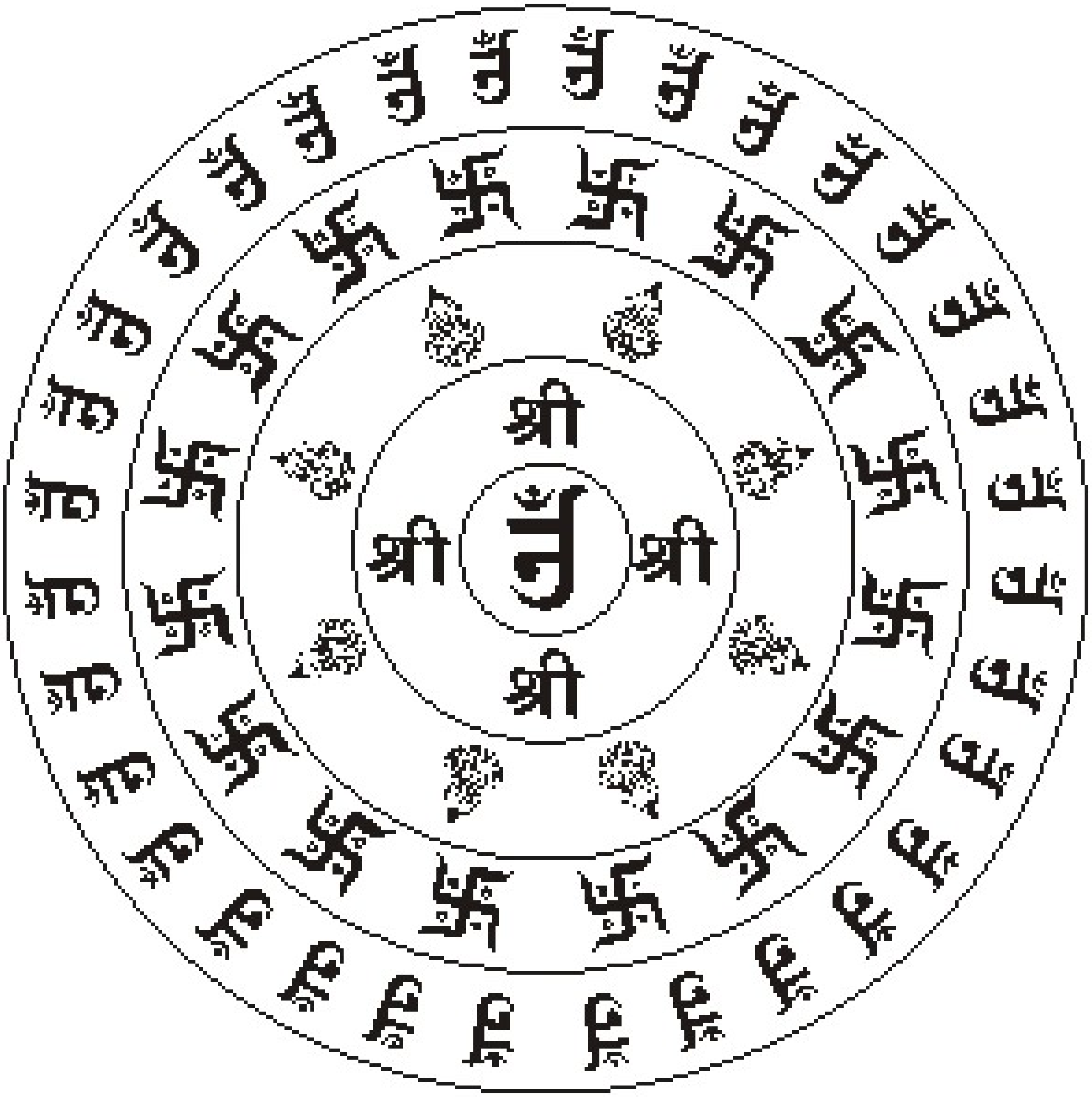

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार।।7।।

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार।।8।।

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान।।9।।

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म।।10।।

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्ञामि, अरिहंते सरणं पवज्ञामि, सिद्धे सरणं पवज्ञामि, साहू सरणं पवज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्ञामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥
परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन–वच–काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो।।
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को।।1।।

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।2।।

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है।।
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है।।3।।

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है।।
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है।।4।।

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है।।

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं
(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।
विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।
कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।
श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।
श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन–कीर्तन–भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना॥
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दु:ख मिटाये आपना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:–ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे॥ जिन शासन...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये॥ जिन शासन...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे॥ जिन शासन...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥1॥

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं
    (णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

चंदनषष्ठी व्रत विधान

(नरेन्द्र छंद)

श्री चंदनषष्ठी व्रत नायक, चंद्रनाथ को ध्यायें।
चंदन षष्ठि व्रत अपनाकर, प्रभु की भक्ति रचायें।।
मन-वच-काया शुद्धि पूर्वक, इस व्रत को अपनायें।
पुष्पों से आह्वान करें हम, प्रभु को हृदय बसायें।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण कलश में निर्मल जल भर ला रहे।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने आ रहे।।
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना।।1।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से भी शीतल हैं प्रभु के चरण।
चंदन चरण लगायें मेटें भव भ्रमण।। चंद्रनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद अक्षय पद दाता से मिले।
उनकी पूजा भक्ति करने हम चले।। चंद्रनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चुनकर लायें रंग-बिरंगे फूल हम।
फूल चढ़ाकर पायें प्रभु पद धूल हम।। चंद्रनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी फैनी मधुर इमरती पूड़ियाँ।
प्रभु की पूजा से मिटती भव दूरियाँ।।
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना।।5।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी जग-मग करती दीपावली।
आरती करके पायें सुख की छावली।। चंद्रनाथ... ।।6।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशायें महक उठी इस धूप से।
धूप चढ़ाकर बच जायें भव कूप से।। चंद्रनाथ... ।।7।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आम जाम व रामफल।
फल की अर्चा से मिलता है मोक्षफल।। चंद्रनाथ... ।।8।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छम-छम नाचे-गायें प्रभु भक्ति करें।
अर्घ चढ़ाकर हम अपने संकट हरें।। चंद्रनाथ... ।।9।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- चंदन षष्ठी व्रत करें, करते भव्य विधान।
शुद्धि से प्रभु को भजें, कहते सब भगवान।।

अथ मंडलस्योऽपि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शेर छंद (तर्ज : हे दीनबंधु श्रीपति...)

जिनमात देखती है सोलह स्वप्न रात में।
स्वप्नों का फल बताये पिता सुप्रभात में।।

विशेष नोट- इस व्रत में चन्द्रप्रभु भगवान की ही 6 बार पूजा करें।

आकर के अष्ट देवियाँ माता को सजायें।
हम अर्घ चढ़ा आज गर्भ पर्व मनायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवतार लेके नाथ ने सबको जगा दिया।
क्षणमात्र को त्रिलोक से सब दुःख भगा दिया॥
सौधर्म ने जिन राज का अभिषेक रचाया।
हमने चढ़ाके अर्घ वही पुण्य कमाया॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार को असार जान वन को चल दिये।
केशों का लोच करके प्रभु आत्मरस पिये॥
मुद्रा प्रभु की त्याग का संदेश दे रही।
अनुमोदना दीक्षा की करें भाव से यही॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के समवशरण में सभी भव्य आ रहे।
शुभ दर्श पाके आप से सम्यक्त्व पा रहे॥
श्री केवली भगवान की हम आरती करें।
कीर्तन करें वंदन करें, पर मन नहीं भरे॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान तीर्थनाथ हमें पास बुलायें।
भगवान शब्द मात्र ही भव पार लगाये॥
भगवान भव से तर गये भव्यों को तारते।
हम भव्य प्राणी आपको मन से पुकारते॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर का गर्भ जन्म हुआ चंद्रपुरी में।
उत्सव मनाने आये देव स्वर्गपुरी से॥

मधुवन से मोक्ष पा लिया भगवान आपने।
हम अर्घ चढ़ा भक्ति करें पाप नाशने।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र पूजते सदैव चंद्रनाथ को।
हम अर्घ चढ़ा नमन करें चंद्रनाथ को।।
हमसे हुई अशुद्धि उनकी माँगते क्षमा।
सब पाप दोष कष्ट हरो माँगते क्षमा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूज्याय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तीर्थ-नगर-क्षेत्र चन्द्रनाथ विराजे।
अतिशय वहाँ पे होय बजे नित्य ही बाजे।।
इस व्रत में होती है विशेष चंद्र अर्चना।
हम नाथ आपकी करें त्रिकाल वन्दना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र विराजित त्रिकाल पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन शुद्धि को छोड़कर, की पूजा अभिषेक।
क्षमा करो हे नाथ ! अब, पूजें भक्त विशेष।।
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से हमने किया, बिना शुद्धि गुणगान।
पाप बंध उसमें किया, रहा नहीं कुछ भान।।

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया को धोया मगर, किया नहीं मुख शुद्ध।
शुद्ध वस्त्र धारण किये, छूकर किये अशुद्ध॥ शुद्धि..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किये विधान बड़े-बड़े, तजकर शुद्धि विवेक।
भोजन पानी ले लिया, भूले वस्त्र विवेक॥ शुद्धि..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूजा विधाने अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छींक जंभाई खाँसी में, करके वस्त्र अशुद्ध।
पाप बंध हमसे हुआ, कैसे हो हम शुद्ध॥ शुद्धि..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थों में हम जब गये, परिजन संग ले साथ।
खा पीकर हम पेट भर, गये प्रभु के पास॥ शुद्धि..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थक्षेत्रे अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरूओं के आहार में, पहने वस्त्र न शुद्ध।
झूठ बोल शुद्धि कहे, मन-वच-काय अशुद्ध॥ शुद्धि..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पात्र दान संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा स्वाध्याय में, तन अशुद्ध जब होय।
छिपा लिया वह दोष जब, तन कुष्ठी तब होय॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवपूजा स्वाध्याय संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन तो मैला कर लिया, तन भी मैला होय।
वचनों से शुद्धि कहें, तीनों शुद्ध न होय॥ शुद्धि..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन–वच–काय कृत सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकारित अनुमोदना, अच्छा बुरा दिखाय।
मन–वच–काया तीन ये, पुण्य–अपुण्य दिलाय॥ शुद्धि..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नवकोटी जनित दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाकर जो किये, इक दिन बाहर आय।
घड़ा पाप का फूटता, सबको ही दिख जाय॥ शुद्धि..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापान्धकार निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाये ना छिपे, छिपे ना कोई रोग।
शुद्धि से प्रभु भक्ति कर, मिट जायें सब रोग॥ शुद्धि..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ बोलकर दे दिया, मुनिवर को आहार।
कोढ़ होय जब देह में, करते कर्म प्रहार॥ शुद्धि..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं असत्य वचन संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसात्मक सामग्री से, सजा रहे जो काय।
उसमें जिन–गुरु भक्ति कर, दुःखकर पाप कमाय॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध कायसंबंधि सर्वदोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली गुरु श्रुत देव पर, करते जो अपवाद।
दर्शन मोह कुकर्म भी, देता उन्हें विषाद॥ शुद्धि..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं देव–शास्त्र–गुरु संबंधि सर्व अपवाद दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की निंदा जो करे, या करते अपमान।
उसकी दुर्गति हो अवश, होगा ना कल्याण॥ शुद्धि..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरु निंदा संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधु माँस व्यसनी अगर, करते पूजा पाठ।
उनको दुर्गति दुःख मिले, मिले नरक का ठाठ॥ शुद्धि..॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त व्यसन संबंधि सर्व दुर्गति पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसनी हो प्रभु को भजे, पाये कष्ट अनेक।
पाप छिपाने अघ करे, लेकिन नहीं विवेक॥ शुद्धि..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गठरी बाँधे पाप की, कुल में दाग लगाय।
जन्मा जिन कुल में मगर, जैन नहीं बन पाय॥ शुद्धि..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुल कलंक दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होटल में भोजन किया, चाय कॉफी के साथ।
विषय लोलुपी बन किया, पाप बंध हे नाथ !॥

शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध भोजन संबंधि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास अनेक कर, किया मंत्र का जाप।
दर्शन पूजा सब किया, मन को किया न साफ॥ शुद्धि.. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन संबंधि सर्वपाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म जिन कुल मिला, पाई उत्तम देह।
लगे रहे नित भोग में, व्यर्थ गंवाई देह॥ शुद्धि.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं अति आसक्ति दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक काय निरोग थी, किया नहीं कल्याण।
जरा रोग तन में लगा, कैसे हो कल्याण॥ शुद्धि.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं देह व्याधि निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोखा छल अन्याय व, ईर्ष्या अत्याचार।
स्व हिंसा पर घात कर, किया पाप व्यापार॥ शुद्धि.. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं छल–कपट, राग–द्वेष, ईर्ष्या–पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

मन रोगी का मन है चंचल, रोग मानसिक कहलाये।
मन से सोचा बुरा अगर जो, ऐसे रोग उभर आये॥
ऐसे रोग नशाने भगवन, अर्चा करने हम आये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानसिक रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शिरशूल दर्द व चक्कर, शिर के रोग अनेकों हों।
अति तनाव में टेंशन होता, बुद्धि विकार अनेकों हों॥
बुद्धि रहे सदा सद्बुद्धि, यही भावना हम भायें॥ सर्व रोग..॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिर शूल तनाव आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया के किसी अंग में, जब कैंसर हो जाता है।
महारोग का नाम सुने वो, जीव शीघ्र मर जाता है॥
हमने करी अशुद्धि भगवन्, रोग इसी कारण आये॥ सर्व रोग..॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं कैंसर आदि रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत दाग काया पे होते, दिखती काया अधी जली।
चर्म रोग व लाल दाग से, मुरझाती है हृदय कली॥
कुष्ठ रोग होता अशुद्धि से, शुद्धि से प्रभु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुष्ठ आदि रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव-विभोर भक्ति करते पर, शुद्धि का कुछ ज्ञान नहीं।
कर्म वेदनी अति दुःख देता, बी.पी. शूगर बड़े वहीं॥
ऐसे राज रोग से बचने, प्रभु की पूजा रचवायें॥ सर्व रोग..॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं बी.पी. शुगर आदि वेदनीय कर्मजनित सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन के राग-द्वेष ही हमको, पाप बंध करवाते हैं।
मलिन हो गया मन मंदिर ये, हृदय गति रुकवाते हैं॥
तन अच्छा है जब तक अपना, देव-शास्त्र-गुरु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं रागद्वेष पापजनित हृदयादि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय अटैक अचानक तन पे, किडनी लीवर साथ न दे।
पेट में पथरी किड़नी बिगड़ी, तन भी अपना साथ न दे॥

जो–जो भी अपराध हुये हैं, क्षमा माँगने हम आये॥
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं किडनी लीवर आदि उदर संबंधि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञात और अज्ञात भाव से, हमसे दुष्कर पाप हुआ।
उनका फल पाया जब हमने, हमको बहु संताप हुआ॥
उन कर्मों के बंध छुड़ाने, हम श्री जिनवर को ध्यायें॥ सर्व रोग.. ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाताज्ञात भावकृत सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं नहीं खाते जो वस्तु, खिला रहे व्यापार किया।
भक्ष्याक्ष्य विवेक छोड़कर, तन को मरघट बना लिया॥
पेट महारोगी हो इससे, मौत सामने आ जाये॥ सर्व रोग..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ष्याभक्ष्य भोजन संबंधि सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन भी जावे धन भी जावे, ऐसा रोग कभी ना हो।
देव गुरु की भक्ति करें नित, हमको रोग कभी ना हो॥
कोमा लकवा हो ना तन में, स्वस्थ शरीर सभी पायें॥ सर्व रोग.. ॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोमा–लकवा आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोम–रोम में रोग लगे हैं, सर्व अंग अति पीड़ित हैं।
आँख नाक व कर्ण दाँत के, रोगों से हम पीड़ित हैं॥
सर्दी खाँसी कंठ पीठ व, दर्द कमर में ना आये॥ सर्व रोग.. ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाङ्ग रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव से जो कर्म बंधे हैं, वो भी अब प्रभु नश जायें।
हो ना हमसे नाथ अशुद्धि, ऐसी प्रज्ञा जग जाये॥
प्रभु भक्ति ही पार लगाती, दुर्गति में हम ना जायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायकाय सर्व अशुद्धि हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य बढ़ाने के जो साधन, प्रभु भक्ति गुरु की सेवा।
पूजा दान करें हम निशदिन, मिले भक्ति का नित मेवा॥
संकट-पीड़ा-कष्ट मिटाने, हम भी प्रभु के गुण गायें॥ सर्व रोग..॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं संकट पीड़ा कष्ट निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धि ही सिद्धि को देती, प्रभु व गुरुवर बतलायें।
सही मार्ग पे जो नित चलते, दुःख में कभी ना घबरायें॥
संकट की घड़ियों में भी हम, रंच न विचलित हो जायें॥ सर्व रोग..॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दुःखहरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास आदि के द्वारा, कर्म कटेंगे शास्त्र कहें।
दान धर्म समता रखने से, शूल हटेंगे शास्त्र कहें॥
पापों की हम निंदा करते, आलोचन करने आये॥ सर्व रोग..॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव देवों की पूजा भक्ति, करने में जो दोष हुये।
इसी पाप के कारण हमको, इस काया में रोग हुये।
काय निरोगी रहे हमारी, रत्नत्रय हम भी पायें॥ सर्व रोग..॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरोग शरीर प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव का तन है अति उत्तम, अच्छे उत्तम कार्य करें।
इसी गति को पाकर प्राणी, मुक्ति का सोपान वरे॥
कर्म कालिमा पाप वर्गणा, जिन भक्ति से विनशायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्म कालिमा पाप वर्गणा हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गति दुर्गति मिले यही से, पुण्य–पाप हमने बाँधा।
शुद्धि अशुद्धि करे मनुज ही, पाप रोग बनकर आता॥
खोटे अशुभ करम विनशाने, प्रभु चरणों में हम आये॥ सर्व रोग.. ॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गति निवारणाय सद्गति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र और काल भाव भी, शुद्ध जहाँ नहिं होते हैं।
धर्म कार्य कर लेने पर भी, बीज पाप के बोते हैं॥
पुण्य कमायें प्रभु भक्ति से, पाप नशाने हम आये॥ सर्व रोग.. ॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व क्षेत्रादि अशुद्धि निवारकाय पुण्य वृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप उदय में आता है जब, बिलख–बिलख कर रोते हैं।
कैसे दुःख की घड़ियाँ बीते, चिंता में ना सोते हैं॥
हे भगवन् ! इन दुःख से तारों, हम सब चरणों में आये॥ सर्व रोग.. ॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिदुःख त्रास हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म की लीला अद्भुत, पुण्य पाप बन जाता है।
धर्म कार्य करने वाला भी, दुःखी नजर अब आता है॥
ऐसे कर्म हमारे क्षय हो, निशदिन हम प्रभु गुण गायें॥ सर्व रोग.. ॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप हराय धर्मवृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूतक पातक जब हो घर में, भूल स्वयं हम करते हैं।
मंदिर जाते माला जपते, गंधोदक ले लेते हैं॥
सूतक पातक जो ना पाले, वो भी निश्चित दुःख पाये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥54॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूतक पातक संबंधी अशुद्धि दोष हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय आता पापों से, भक्ति से ही कर्म कटें।
जो कर्मों से नहीं घबराते, उनके निश्चित कर्म कटें॥
कर्म उदय में ना घबराये, ऐसी हम शक्ति पायें॥ सर्व रोग..॥55॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्तिरूपी शक्ति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया को स्वस्थ बनाने, आगम की आज्ञा पालें।
शिर से लेकर पैरों तक के, रोग देव भक्ति टाले॥
हमसे जो भी दोष हुये प्रभु, क्षमा माँगने हम आये॥ सर्व रोग.. ॥56॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वांग काया स्वस्थ करणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

केलादि फल के गुच्छ संग, श्रीफल ध्वजादि ला रहे।
पुष्पादि माला दीप संग, पूर्णार्घ इन्द्र चढ़ा रहे॥
सम्पूर्ण रोगों को हरे, जिनराज की ये अर्चना।
सुख शांति जिनगुण प्राप्त हो, इस हेतु करते वंदना॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : भक्ति भाव का नीर ले, आये प्रभु के द्वार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, मिलती शांति अपार॥

शांतये शांतिधारा

दोहा : पुष्पों से कोमल अति, तीर्थंकर जिनराज।
हृदय पुष्प पुलकित हुआ, पुष्प चढ़ाके आज॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय श्यामयक्ष ज्वालामालिनी देवी सहिताय नमः स्वाहा। अथवा (2) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रतोद्यापने श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (3) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रताधिपति श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा : चंदन षष्ठी व्रत करें, हम सब हे भगवान !।
जयमाला व्रत की पढ़ें, पायें मुक्ति महान्॥

चौपाई

जय-जय हो तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
जयमाला ये मंगलकारी, प्रभु की भक्ति है सुखकारी॥1॥
चंदन षष्ठी व्रत अपनाये, काया चंदन सी महकाये।
जो कोई इस व्रत को पाले, परम्परा से शिव सुख पाले॥2॥
एक शहर उज्जैन कहाये, ईश्वर प्रभु के भक्त कहायें।
वहाँ श्रमण अतिमुक्तक आये, मास-मास उपवास रचायें॥3॥
ईश्वरचंद उन्हें पड़गाये, निज भार्या को पास बुलाये।
बोला हम गुरु को ले आये, दोनों मिल आहार करायें॥4॥
भय से पत्नी ने मुँह फेरा, कहे अपावन यह तन मेरा।
मैं गुरु को आहार न दूँगी, पाप बंध मैं नहीं करूँगी॥5॥
सेठ कहे चुप रह सेठानी, मैंने तो आहार की ठानी।
जाओ जल्दी थाली लाओ, गुरुवर को आहार कराओ॥6॥
अशुद्ध तन चर्या करवाये, चर्या कर गुरु वन में जाये।
तीन दिवस जैसे ही होते, कुष्ठ रोग से दोनों रोते॥7॥
गुप्त पाप उदयागत आया, तन में कोढ़ निकलकर आया।
बड़े कष्ट से समय बिताये, पुण्य उदय से मुनि संघ आये॥8॥
भद्रगुरु के दर्शन पाये, गुरु को अपनी व्यथा सुनाये।
कोढ़ हुआ क्यों हमको स्वामी, आप बताओ अन्तर्यामी॥9॥

तब गुरुवर उनको बतलाये, उनका दोष सहज समझायें।
तुमने छल से दान दिया था, संयम का अपमान किया था॥10॥
वही पाप उदयागत आया, गले कोढ़ से अब तुम काया।
पश्चात्ताप उन्हें तब आया, उनने गुरु को शीश झुकाया॥11॥
बोले हमको मार्ग दिखाओ, दुःख संकट से मुक्त कराओ।
गुरु ने करुणा भाव दिखाया, चंदन षष्ठी व्रत दिलवाया॥12॥
भादो कृष्णा छठ जब आये, वो ही चंदन छठ कहलाये।
दोनों इस व्रत को अपनाओ, कंचन सम उत्तम तन पाओ॥13॥
श्री गुरुवर से व्रत अपनाया, छह अनशन कर पुण्य कमाया।
विधिवत इस व्रत को अपनाया, उत्तम उद्यापन करवाया॥14॥
व्रत से सुन्दर तन को पाया, धार समाधि सुर-तन पाया।
ईश्वर नृप बन मुनिव्रत धारें, तद्भव से वो मोक्ष पधारें॥15॥
चंदन बनी पद्मिनी रानी, उसकी थी ये बड़ी कहानी।
बनी आर्यिका फिर वो रानी, छेदे स्त्रीलिंग प्रधानी॥16॥
पुनः मनुज तन जब वो पाये, निश्चित श्रेष्ठ सिद्ध पद पाये।
एक बार जो व्रत अपनाता, सर्व दुःखों से मुक्ति पाता॥17॥
मन के साथ वचन की शुद्धि, वचनों के संग तन की शुद्धि।
शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति, देती है पापों से मुक्ति॥18॥
चंदन षष्ठी व्रत अपनायें, 'आस्था' से प्रभु के गुण गायें।
चन्द्रनाथ जिन को हम ध्यायें, गुप्ति समिति धर शिवसुख पायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चंद्रनाथ जिनराज का, करते हम गुणगान।
गुप्ति समिति व्रत पालकर, बन जायें भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ

श्याम यक्ष

(अडिल्ल छंद)

श्याम यक्ष श्री चंद्रप्रभु को ध्या रहे।
प्रभु की पूजा भक्ति यक्ष रचा रहे।।
श्याम यक्ष को अर्घ समर्पण हम करें।
वो उनके दुःख हरते जो श्रद्धा करें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन प्रभावक श्री श्याम यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ज्वालामालिनी यक्षिणी

(अडिल्ल छंद)

चंद्रप्रभु की यक्षी ज्वाला मालिनी।
जिन शासन की रक्षक ज्वाला मालिनी।।
जिनशासन का ध्वज माता फहरा रही।
उन्हें पूजने भक्त टोलियाँ आ रही।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन सेविका श्री ज्वालामालिनी यक्ष्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

***

विधान प्रशस्ति

अडिल्ल छंद

वृषभादि चौबीस नाथ को है नमन।
चंद्रप्रभु को करते हैं शत्-शत् नमन।।
सरस्वती माँ गणधर गुरुओं को नमन।
कुंथु-कनक-गुप्तिनंदी गुरु को नमन।।1।।

चंदनषष्ठी व्रत का भव्य विधान ये।
अल्प समय में पूर्ण हुआ सु विधान ये।।
गुप्ति गुरु ने इसका संपादन किया।
हमने इसको भक्ति से निर्मित किया।।2।।

इस वसुधा पे जब तक सूरज-चाँद हैं।
भव्यों द्वारा ये विधान होता रहे।।
इस विधान की महिमा अपरम्पार है।
''आस्था'' का प्रभु वंदन बारम्बार है।।3।।

***

आरती

(तर्ज – ना कजरे की धार ना...)

श्री चंद्रनाथ भगवान, करते हम सब गुणगान।
लेकर दीपों की थाल, करते मंगल आरती आज॥–2
हो हो.. आ–आ..

चंदन षष्ठी व्रत धारें, अपने सब अघ परिहारें–2
चंदा प्रभु की पूजा कर, नर–नारी व्रत स्वीकारें॥
इस व्रत को, श्रद्धा से–2, पालन करते नर–नार॥1॥
श्री........

भादो कृष्णा षष्ठी को, इक वर्ष में व्रत ये आता–2
विधिपूर्वक व्रत जो करता, वो मोक्ष लक्ष्मी पाता॥
चंदा प्रभु की, पूजा करके–2, पाते हम सौख्य अपार॥2॥
श्री........

चंदन षष्ठी का हम सब, पूजन–विधान करते हैं–2
करते व्रत का उद्यापन, चंदन सम सुख वरते हैं॥
''आस्था'' से, हम आये–2, हे चन्द्र प्रभु ! तव द्वार॥3॥
श्री........

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय............

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पद्मपुरा, तिजारा, अहिच्छेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..................... प्रान्ते–नगरे........... मासानांमासे.........मासे.........पक्षे.........तिथौ..........वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥
छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः–3जः–3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट–दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा
आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री बृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री बृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री बृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

final 14-11-2022

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-
सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी
(आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति
(गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)